अध्याय-16

दैवासुरसम्पद्विभागयोग-नामक 16वाँ अ0।।

[1-5 फलसहित दैवी और आसुरी सम्पदा]

श्रीभगवानुवाचः-अभयं सत्त्वसंशुद्धिः ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायः तपः आर्जवं।। 16/1

अभयं सत्त्वसंशुद्धिः ज्ञानयोग-	निर्भयता, चित्त की संपूर्ण शुद्धि, {क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ=रथ और रथज्ञ का} ज्ञान और योग में
व्यवस्थितिः च दानं दमः यज्ञः	विशेषतः निरन्तर स्थिरता और दान, मन सहित 10 इन्द्रियों का संयम, यज्ञसेवा,
स्वाध्यायः तप च आर्जवं	{सभी जन्मों का} आत्माध्ययन, {आत्म ज्योतिबिंदु की सहज-सहज स्मृतिरूप} तप और सरलता,

अहिंसा सत्यं अक्रोधः त्यागः शान्तिः अपैशुनं। दया भूतेषु अलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीः अचापलं।। 16/2

अहिंसा सत्यं अक्रोधः त्यागः	{मन-वचन-कर्म से दुःख न देना-ऐसी} अहिंसा, सत्य, क्रोधहीनता, त्याग,
शांतिः अपैशुनं भूतेषु दया	शांति, दूसरों के दोष न देखना, {सभी क्षुद्र} प्राणियों पर {भी} दया {का भाव},
अचापलं ह्रीः मार्दवमलोलुप्त्वं	{तन-मन की} चंचलता न होना, लज्जा, {अपनी वाणी में} मीठापन {और} लोभहीनता,

तेजः क्षमा धृतिः शौचं अद्रोहः नातिमानिता। भवन्ति सम्पदं दैवीं अभिजातस्य भारत।। 16/3

भारत तेजः क्षमा धृतिः	हे भरतवंशी! तेजस्विता, क्षमा, {यथोचित} धैर्य, { मन & तन से अन्दर-बाहर की}
शौचमद्रोहः नातिमानिता	शुद्धता, {किसी से} द्रोह न करना,{देहधारी होते भी} अधिक मान न करना- {ये सभी}
दैवीं सम्पदमभिजातस्य भवन्ति	{गुण सत्य-सनातनी} दैवी सम्पदा सहित जन्म लेने वालों के होते हैं। {असुरों के नहीं}

दम्भो दर्पः अभिमानश्च क्रोधः पारुष्यं एव च। अज्ञानं च अभिजातस्य पार्थ सम्पदं आसुरीं।। 16/4

पार्थ दंभः दर्पोऽभिमानश्च	हे {सारी} पृथ्वी के राजा! {दिखावामात्र} पाखंड, घमंड और {देहगत श्रेष्ठता का} अभिमान तथा
क्रोधः पारुष्यं च एवाज्ञानं	{अंदरूनी-बाहरी} क्रोध, कठोरता और ऐसे ही बेसमझी-{ये अवगुण द्वैतवादी द्वापर से आए विधर्मियों की}
आसुरीं सम्पदं अभिजातस्य	{हिंसावादी} राक्षसी सम्पत्ति से जन्म वालों के हैं, {ये दैवी सनातन धर्म के गुण नहीं हैं।}

दैवी सम्पत् विमोक्षाय निबन्धाय आसुरी मता। मा शुचः सम्पदं दैवीं अभिजातः असि पाण्डव।। 16/5

दैवी सम्पत् विमोक्षाय आसुरी	दैवी सम्पत्ति दुःखों से मुक्ति के लिए है। {अवगुण रूप} राक्षसी संपदा {नारकीय}
निबन्धाय मता पाण्डव मा शुचः	दुःखों में बंधने लिए मानी गई है। {परन्तु} हे पाण्डव! {तू कभी भी} दुःखी मत हो;
दैवीं सम्पदं अभिजातः असि	{क्योंकि तूने राक्षसों-बीच प्रह्लाद की ही} दैवी सम्पत्ति के साथ जन्म लिया है।

[6-20 आसुरी सम्पदा वालों के लक्षण और उनकी अधोगति का कथन]

द्वौ भूतसर्गौ लोके अस्मिन् दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु।। 16/6

पार्थ अस्मिन् लोके भूतसर्गौ	हे पार्थ ! इस {ब्रह्मा के दिन-रात वाली सुख-दुःख की} दुनियाँ में प्राणियों की सृष्टि
द्वौ एव दैव च	{स्वर्ग और नरक} 2 प्रकार की ही है- {ज्ञानसूर्य शिव के दिन में} देवताओं की और {नारकीय रात में लेवताओं-जैसे}
आसुर दैवः विस्तरशः	{दुखदाई} राक्षसों की। दैवी सृष्टि विस्तार से {चौमुखी संगठित ब्रह्मामुख द्वारा पहले ही}
प्रोक्तः आसुरं मे शृणु	बताई गई। {अब उत्तरोत्तर सदा दुःखदायी} आसुरी सृष्टि मेरे {शिव समान जगत्पिता} से सुन।

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुः आसुराः। न शौचं न अपि च आचारः न सत्यं तेषु विद्यते।। 16/7

आसुराः जना प्रवृत्तिं च	{द्वापुर से द्वैतवादी} आसुरी गुणों वाले {देहाभिमानी} मनुष्य करने योग्य {सुखदायी} कर्म और
निवृत्तिं च न विदुः तेषु	त्यागने योग्य {दुःखदायी हिंसक} कर्म को भी नहीं जानते। उनमें {नारकीय भ्रष्ट इन्द्रियों की}
न शौचं नाचारः च सत्यं	{तीव्र लोलुपता के कारण से} न {तन-मन-धनादि की} शुद्धता, न सदाचार और सत्यता

अपि न विद्यते	भी {द्वापर-कलियुगी नरक में उतरोत्तर तीव्रतर घटती कलाएँ भी विद्यमान} नहीं होती। {कलियुगांत में कलाहीन}

असत्यं अप्रतिष्ठं ते जगत् आहुः अनीश्वरं। अपरस्परसम्भूतं किं अन्यत् कामहैतुकं।। 16/8

ते जगत् असत्यं अप्रतिष्ठं	वे {विदेशी, प्रायः स्वदेश के भी कन्वर्टिड भारतीय विधर्मी दैत्य} जगत् को मिथ्या, आधारहीन,
अनीश्वरं अपरस्परसम्भूतं	ईश्वरविहीन, {स्त्री-पुरुष के क्षणिक दैहिक सुख में} परस्पर {संभोग के} संयोग से उत्पन्न हुआ,
कामहैतुकं किमाहुः मन्यत्	{जिस मिलन में} कामवासना {ही} कारण है, दूसरा क्या?- {वे राक्षस ऐसे ही} मानते हैं।

एतां दृष्टिं अवष्टभ्य नष्टात्मानः अल्पबुद्धयः। प्रभवन्ति उग्रकर्माणः क्षयाय जगतः अहिताः।। 16/9

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानः	ऐसे स्वार्थी दृष्टिकोण का आधार लेकर नष्ट हुई आत्मस्थिति {से, देहभान} के भाव वाले
अल्पबुद्धयःउग्रकर्माणः जगतः	अल्पबुद्धि लोग, क्रूर कर्म करने वाले {राक्षस}, जगत का {महाविनाश होने तक सदाकाल}
अहिताः क्षयाय प्रभवन्ति	{महा} बैरी बनने वाले, {अंततः पूरा ही एटामिक} विनाश करने के लिए उत्पन्न होते हैं।

कामं आश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः। मोहात् गृहीत्वा असद्ग्राहान् प्रवर्तन्ते अशुचिव्रताः।। 16/10

दुष्पूरं कामं आश्रित्य दंभमान-	{सदा} अतृप्त कामवासना का आश्रय लेकर, {दिखावामात्र} पाखण्ड, मान {-मर्तबा}
मदान्विताः मोहात् असद्ग्राहान्	{और} मद से भरे हुए, मूर्खता से {भगोड़ों जैसे क्षणिक और} असत्य सिद्धान्तों को
गृहीत्वा अशुचिव्रताः प्रवर्तन्ते	पकड़कर {दिन-रात चोरी-डकैती, रिश्वतखोरी-जैसे असंख्य} अपवित्र कर्म करते हैं।

चिन्तां अपरिमेयां च प्रलयान्तां उपाश्रिताः। कामोपभोगपरमा एतावत् इति निश्चिताः।। 16/11

प्रलयान्तामपरिमेयां चिन्तां	{वे जगत के} प्रलयांत तक अनगिनत {अपूरणीय, क्षणिक आकांक्षाओं वाली} चिन्ताओं के
उपाश्रिताः कामोपभोगपरमा	{सदाकाल} आधीन हुए, {सदा वर्धनीय} कामविकार भोगना ही {सांसारिक} परमप्राप्ति है

च एतावदिति निश्चिताः	और {संसार में} 'यही सब-कुछ है', {यही परमानंद है}- ऐसे {ही भ्रम में दृढ़} निश्चयी हैं।

आशापाशशतैः बद्धाः कामक्रोधपरायणाः। ईहन्ते कामभोगार्थं अन्यायेन अर्थसञ्चयान्।। 16/12

आशापाशशतैः बद्धाः कामक्रोधपरायणाः	सैकड़ों आशाओं के फंदों में जकड़े हुए, काम-क्रोध {आदि} के वशीभूत हुए,
कामभोगार्थं अन्यायेन अर्थसंचयान् ईहन्ते	कामविकार भोगार्थ {छल-बल-रिश्वतादि के} अन्याय से धनसंग्रहेच्छुक हैं।

इदं अद्य मया लब्धं इमं प्राप्स्ये मनोरथं। इदं अस्ति इदं अपि मे भविष्यति पुनः धनं।। 16/13

अद्य मया इदं लब्धं इमं मनोरथं प्राप्स्ये	आज मुझे यह {जन-धन-पदार्थादि} मिल गया, {कल} इस मनोरथ को पाऊँगा।
इदमस्ति पुनोऽपि मे इदं धनं भविष्यति	यह {वैभव} है; फिर भी मेरा इतना {भरपूर यानी अथाह} धन हो जावेगा।

असौ मया हतः शत्रुः हनिष्ये च अपरान् अपि। ईश्वरः अहं अहं भोगी सिद्धः अहं बलवान् सुखी।। 16/14

मयासौ शत्रुः हतः च अपरानपि	मैंने इस शत्रु को मार लिया है और {भविष्य में} दूसरे {शत्रुओं} को भी
हनिष्ये अहं ईश्वरः अहं भोगी	मार लूँगा। मैं ऐश्वर्यवान हूँ, मैं {राजाई ठाटबाट वालों जैसा} उपभोगकर्ता हूँ,
अहं सिद्धः बलवान् सुखी	मैं {सारे सांसारिक कामों में} सफल हूँ, {इस गाँव या इलाके में सबसे} बलवान {और} सुखी हूँ।

आढ्यः अभिजनवान् अस्मि कः अन्यः अस्ति सदृशो मया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इति अज्ञानविमोहिताः।। 16/15

अभिजनवानस्मि मया सदृशः	{मैं} बड़े {सम्मानीय और} ऊँचे लोगों वाला हूँ। मेरे जैसा {इस समूचे इलाके में}
अन्यः आढ्यः कः अस्ति	दूसरा {इतना} धनवान कौन है? {कुबेर तो अंधश्रद्धालुओं की एक कल्पनामात्र है,धनी-मानी मैं हूँ}
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य	यज्ञ करूँगा, दान दूँगा, {ये करूँगा-वो करूँगा, 5 स्टार होटलों-क्लबों में} आनन्द करूँगा
इति अज्ञानविमोहिताः	ऐसे {निरंतर घोर} अज्ञान {अंधकार} में {भटकते हुए पागलों-जैसे} भलीभांति महामूर्ख बने हुए हैं।

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरके अशुचौ।। 16/16

अनेकचित्तविभ्रान्ताः मोहजाल समावृताः	अनेक विचारों में भटके हुए, {सम्बन्धियों के} मोहजाल में पूरे घिरे हुए {और}
कामभोगेषु प्रसक्ताः अशुचौ नरके पतन्ति	कामभोग में पूरे आसक्त हुए {वेश्यावृत्ति के} गन्दे रौरवनरक में गिरते हैं।

आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः। यजन्ते नामयज्ञैः ते दम्भेन अविधिपूर्वकं।। 16/17

ते आत्मसंभाविताः धनमानमदान्विताः	वे {चाटुकारों द्वारा} अपनी प्रशंसा में फूले हुए, धन और मान-शान के नशे में चूर,
स्तब्धा नामयज्ञैः दम्भेन	{झूठी परम्पराओं के} हठधर्मी, {स्वाहा-2 के दिखावटी} नाममात्र के यज्ञों से घमण्डपूर्वक {अड़े हैं,}
अविधिपूर्वकं यजन्ते	सच्चीगीता-संविधान के प्रतिकूल {झूठी & अंधश्रद्धायुक्त} यज्ञ-सेवाएँ करते हैं। {जो दिखावटी ही है}

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः। मां आत्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तः अभ्यसूयकाः।। 16/18

अहंकारं बलं दर्पं कामश्च क्रोधं संश्रिताः	{वे जन-धन-धाम के} अहंकार, बल, घमण्ड, काम और क्रोध के सदा आश्रयी,
आत्मपरदेहेषु मां प्रद्विषन्तः अभ्यसूयकाः	अपनी वा परदेह में मुझ {योग-ऊर्जा} को विद्वेष करते हुए निंदक हैं।

तान् अहं द्विषतः क्रूरान् संसारेषु नराधमान्। क्षिपामि अजस्रं अशुभान् आसुरीषु एव योनिषु।। 16/19

तान् द्विषतः क्रूरान्नराधमान् अशुभानहं	उन द्वेष करने वाले क्रूर मनुष्यों में सबसे नीच {महा} पापियों को मैं
संसारेष्वजस्रं आसुरीषु योनिष्वेव क्षिपामि	संसारचक्र में सदाकाल {भूत-प्रेतादि की} आसुरी योनियों में ही फेंकता हूँ।

आसुरीं योनिं आपन्नाः मूढा जन्मनि जन्मनि। मां अप्राप्य एव कौन्तेय ततो यान्ति अधमां गतिं।। 16/20

कौन्तेय जन्मनि-2 आसुरीं योनिमापन्नाःमूढा	हे कुन्ती-पुत्र! जन्म-2 {नारकीय} आसुरी योनि को प्राप्त हुए मूर्खलोग
मामप्राप्य ततः अधमां गतिमेव यान्ति	मुझको {कभी भी} न पाकर, वहाँ से {अतीव दुखों की} अधम गति ही पाते हैं।

[21-24 शास्त्रविपरीत आचरण को त्यागने और शास्त्रानुकूल आचरण के लिए प्रेरणा।]

त्रिविधं नरकस्य इदं द्वारं नाशनं आत्मनः। कामः क्रोधः तथा लोभः तस्मात् एतत् त्रयं त्यजेत्।। 16/21

कामः क्रोधस्तथा लोभः इदमात्मनः नाशनं	काम, क्रोध & लोभ- ये आत्मा {के तन-मन-धन और बुद्धि} के नाशक
नरकस्य त्रिविधं द्वारं तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्	नारकीय त्रिविध द्वार हैं; अतः ये तीनों {महाशत्रुओं-मानिंद} त्याज्य हैं।

एतैः विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैः त्रिभिः नरः। आचरति आत्मनः श्रेयः ततः याति परां गतिं।। 16/22

कौन्तेय एतैस्त्रिभिः तमोद्वारै र्विमुक्तः नरः	हे कुन्ती-पुत्र! इन 3 {अज्ञानयुक्त} अन्धकार के द्वारों से विमुक्त नर
आत्मनः श्रेयः आचरति ततः परां गतिं याति	आत्मकल्याणार्थ कर्म करता है, जिससे {वैकुण्ठ की} परमगति पाता है।

यः शास्त्रविधिं उत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिं अवाप्नोति न सुखं न परां गतिं।। 16/23

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य कामकारतः वर्तते स	जो गीताविधान को छोड़ मनमत {या कोई भी मानवमत} प्रमाण चलता है, वह
न सिद्धिं न सुखं न परां गतिमवाप्नोति	न सिद्धि को, न सुख को, न {कलातीत वैकुण्ठ की विष्णुलोकीय} परमगति को पाता है।

तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुं इह अर्हसि।। 16/24

तस्मात्ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ शास्त्रं प्रमाणं	इससे तुझे कार्याकार्य का फैसला करने में {सच्चीगीता के} शास्त्रीय प्रमाण को
ज्ञात्वा इह शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुं अर्हसि	जानकर यहाँ सर्वशास्त्र-शिरोमणि संविधान में कहा कर्म {ही} करने योग्य है।